समस्या के स्त्रोत

समस्या के चयन के लिए यह जानना आवश्यक होता है कि समस्या का चयन कहां से किया जाता है और समस्या के चयन के लिए स्त्रोत क्या-क्या है? इस क्षेत्र में विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों ने निम्नलिखित स्त्रोतों को बतलाया है :

जे. सी. अल्माक ने समस्या को खोजने के लिए निम्न में 4 तरीकों का वर्णन किया है -

1. ऐतिहासिक अभिलेखों द्वारा ।

2. व्याख्या में जो कभी रह गई है उसे खोज निकाला जाए ऐसे स्थलों को ढूंढ निकाला जाए।

3. ऐसे स्थलों को ढूंढ निकाला जाय जिनके निष्कर्षों की विधिवत जांच नहीं की गई है।

4. विषय संबंधी अध्ययन, चिंतन और गोष्ठी को विकसित किया जाए ।

जॉन डबल्यू वेस्ट के अनुसार समस्या चयन के स्रोत :

1. कक्षा, विद्यालय या समाज स्वयं में एक साधन है। सभी शिक्षक रोजाना ही अनेक समस्याओं का सामना करते हैं। जो कुछ भी हम कर रहे हैं , वैसा क्यों ? जो पाठ्यक्रम पढ़ा रहे हैं, वहीं क्यों पढ़ाया जाए ?

2. क्या हमारी शिक्षा प्रभावपूर्ण है? क्या छात्रों में आवश्यक परिवर्तन लाने में हम समर्थ हो रहे हैं? यदि नहीं तो क्यों? कठिनाईयां क्या है? इस तरह के अनेकों समस्याओं का सामना वह रोज ही करता है। इसीलिए यदि वह जिज्ञासु है और अनुसंधान में रुचि रखता है तो वह किसी पर भी कार्य कर सकता है।

3. प्राविधिक परिवर्तन और सामाजिक विकास भी दिन पर दिन नई समस्याएं तथा अनुसंधान के लिए क्षेत्र प्रदर्शित कर रहे हैं । शिक्षा के क्षेत्र में नई विधियां, शिक्षक कार्य, टेलीविजन, रेडियो आदि का उपयोग शिक्षा में कहां तक क्रांतिकारी बदलाव ला सकते हैं, यह शोध का विषय है।

4. स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत ही अनुसंधानकर्ता में खोजपूर्ण आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास हो जाना चाहिए । इस प्रवृत्ति से उसमें वर्तमान कार्य पद्धति के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण पैदा होता है उसमें भी समस्या की जानकारी में वृद्धि होती है। कक्षा में व्याख्यान, वाद विवाद, परिचर्चा प्रतिवेदन तथा कक्षा से बाहर अपने मित्रों एवं अध्यापकों से चर्चा के दौरान उसे अनेक समस्याओं का ज्ञान होता है ।

5. स्नातकोत्तर शोध प्रबंधन तथा इनकी सूची आदि अनेक प्रकाशनो से समस्या की खोज की जा सकती है ।

6. समस्या की खोज का अगला साधन उस क्षेत्र के अधिकारी विद्वानों, शिक्षकों तथा अनुसंधान निर्देशकों से परामर्श करना है। यह लोग अनुसंधान की क्षेत्र में पर्याप्त सहायता कर समस्या का चयन सरल बना सकते हैं ।

अनुसंधान के लिए समस्या का चुनाव निम्नलिखित साधनों और विधियों द्वारा भी किया जा सकता है :

1. अनुसंधान के सुझाव में - शिक्षको, शिक्षाशास्त्रियों तथा अनुसंधान कार्यकर्ताओं द्वारा दिए गए वांछित अनुसंधान में सुझाव में अनुसंधान के लिए समस्याएं तलाशी जाती है । इन सुझावों से हमें संकेत मिलता है जिनके समुचित उपयोग से अनुसंधान के लिए उपयोगी शीर्षक प्राप्त कर सकते हैं।

2. परस्पर विरोधी अनुभवों में - व्यक्ति के परस्पर विरोधी अनुभवों मे से अनुसंधान के लिए समस्या की खोज की जा सकती है । जो शिक्षा प्राप्त कर रहा है या अन्य किसी रूप में शिक्षा संबंधी कार्यक्रम में लगा हुआ है । शिक्षा के किसी भी क्षेत्र में उपलब्ध होने वाली असंगतीयां, विवादास्पद बातें, अपरिचित निष्कर्ष और प्रतिरोध अनुसंधान के विषय बनाए जा सकते हैं।

3. पूर्ण हो चुके अनुसंधान कार्य में - एक प्रबुद्ध मस्तिष्क व्यक्ति पूर्ण हो चुके अनुसंधान कार्यों की सूची में उसी क्षेत्र की या उससे संबंधित क्षेत्रों की समस्याओं के संकेत देख लेता है ।

4. पुराने सिद्धांतों में - प्राचीन सिद्धांतों की उपयुक्तता में जब संदेह हो जाए तो इन सिद्धांतों का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक हो जाता है और इस तरह अनुसंधान की नवीन समस्या का उद्भव हो जाता है।

5. कक्षा विद्यालय और समुदाय में - कक्षा, विद्यालय तथा समुदाय में शिक्षक को रोज नई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कक्षा व्याख्यान, कक्षा विवेचना, परिसंवाद प्रतिवेदन तथा कक्षा से बाहर विद्यार्थियों एवं प्रसिद्ध कुशल शिक्षकों के साथ किए गए विचारों के आदान-प्रदान में भी समस्या चयन के सुझाव प्राप्त हो सकते हैं ।

6. स्पष्टीकरण की कमियों में - ज्ञान के अभाव में उन पूरक समस्याओं की ओर संकेत कर सकते हैं जिनके समाधान द्वारा प्रस्तुत रिक्तियों एवं कमियों को समुचित रूप में भरा जा सकता है।

गुड, बार एवं स्टेट के अनुसार अनुसंधान की समस्या के निम्नलिखित स्त्रोत हैं -

- शिक्षा के अनेक क्षेत्रों में कितना अनुसंधान कार्य हो चुका है।
- पूर्ण अनुसंधान कार्य का विशेष अध्ययन ।
- नवीन प्रवृत्तियों का विश्लेषण ।
- ज्ञान के किसी क्षेत्र का विश्लेषण ।
- वर्तमान क्रियाओं और आवश्यकताओं पर विचार ।
- अनुसंधान की पुनरावृति अथवा प्रसार ।
- अध्ययन के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्र।